

## अध्याय १

### स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था

प्र १. स्वतंत्रता के समय भारतीय कृषि की अवस्था कैसी थी?

उत्तर: १) उत्पादकता का निम्न स्तर

२) उच्च कोटि की सुमेधता

३) भू-स्वामी द्वारा कृषक का भरपूर शोषण

४) भूमि के स्वामी तथा उसे जोतने वाले के बीच चौड़ी खाई

प्र २. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय औद्योगिक क्षेत्र की स्थिति कैसी थी?

उत्तर: १) राज्य की बिभेदमूलक तटकर नीति

२) राज दरबारों का लोप होना

३) मशीनों द्वारा निर्मित वस्तुओं से प्रतियोगिता

४) माँग का नया रूप

५) भारत में रेलवे का आगमन

६) आधुनिक उद्योग का निराशाजनक विकास

प्र ३. ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत विदेशी व्यापार की स्थिति कैसी थी?

उत्तर: भारतीय अर्थव्यवस्था के औपनिवेशिक शोषण के कारण, भारत कच्चे माल तथा प्राथमिक वस्तुओं का शुद्ध निर्यातक बन गया। दूसरी ओर, यह ब्रिटिश उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का शुद्ध आयातक बन गया। ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक नीति के कारण भारत के विदेशी व्यापार पर ब्रिटेन सरकार का एकाधिकारी नियंत्रण हो गया। अधिकांश निर्यात तथा आयात भारत तथा ब्रिटिश के बीच सीमित हो गए।

प्र ४. ब्रिटिश शासन के दौरान जनांकिकीय रुपरेखा कैसी थी?

उत्तर: १) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों उच्च थे – लगभग ४८ तथा ४० प्रति हजार जो कि देश में पायी जाने वाली निर्धनता की व्याख्या हैं।

२) शिशु मृत्यु दर बहुत ऊंची थी जो कि लगभग २१८ प्रति हजार थी। इसकी तुलना में आज यह ५७ प्रति हजार हैं।

- ३) जीवन अवधि केवल ३२ वर्ष थी, जब कि वर्तमान में यह बढ़कर ६५.४ वर्ष हो गयी है।  
४) साक्षरता दर लगभग १६ प्रतिशत थी। यह भी सामाजिक तथा आर्थिक पिछड़ेपन की निशानी है।

प्र ५. स्वतंत्रता के समय पेशेवर ढांचा कैसा था?

उत्तर: १) कृषि – मुख्य व्यवसाय था जिसमें लगभग ७२.७% प्रतिशत कार्यकारी जनसंख्या कृषि में लगी हुई थी।

२) उद्योग – व्यवसाय का उभरता स्रोत या जिसमें कार्यकारी जनसंख्या का केवल १०.१ प्रतिशत भाग निर्माण उद्योगों इत्यादि में लगा हुआ था।

३) असन्तुलित विकास – इस समय केवल प्राथमिक क्षेत्र का विकास हुआ था तथा द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रों का विकास अपने शैशव काल में था।

प्र ६. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय आधारीक संरचना कैसी थी?

उत्तर: ब्रिटिश शासन के दौरान यातयात तथा संचार के क्षेत्र में कुछ आधारीक संरचना का विकास किया गया था। रेलवे के विकास के साथ-साथ डाक-तार, कुछेक बन्दरगाओं तथा सड़कों का निर्माण तथा विकास भी हुआ।

हाँलाकि इन सभी का विकास अपने उपनिवेशी हितों को बढ़ावा देना था न कि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की प्रक्रिया की गति को तीव्र बनाना था।